कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा नहीं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) --

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में --

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय ......हिन्दी......

परीक्षा का दिन ....

दिनांक ....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ 15 1/4 को 16, 17 1/2 को 18, 19 3/4 को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर

संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज का ही उपयोग में लिया गया है।164/2018

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ भी न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड – क

1\.
(अ) समाज के कल्याण के लिए मनुष्य को सर्वप्रथम अपने परिवार की सुख, शांति और प्रेम को बढ़ावा देना चाहिए, अपने कुटुम्ब को सशक्त कर वह समाजिक इकाइयों को सशक्त करेगा तथा शांत और सुखी वातावरण में समाज कल्याण के लिए सोच सकेगा।

(ब) किसी देश को प्रशंसनीय बनाने में योगदान देने वाले तत्व हैं; वहाँ के निवासियों के मन में अपने राष्ट्र के प्रति स्वाभिमान की भावना और राष्ट्र गौरव का पुट, नागरिकों में बंधुत्व का भाव तथा सह अस्तित्व की भावना।

2\.
(अ) किसी भी कार्य को प्रारंभ करने से पूर्व हमें उस कार्य के अंत अर्थात निष्पादनुपरांत फल के बारे में विचारना चाहिए, कार्य के हानि लाभ और ऊँच-नीच को बौद्धिक दृष्टी से परखकर ही कार्य प्रारंभ करना चाहिए, इस प्रकार किया गया कर्म ही इच्छित फलप्रदाई होता है।

(ब) देश के सुधार के लिए हमें हानिकारक और दुराचरी अथवा कुचाली प्रवृत्तियों को शीघ्र ही रोकना चाहिए। राष्ट्रहित और इसमें सुधार के ही सदा उपाय सोचने चाहिए, राष्ट्र का सर्वांगिण विकास तदुपरांत ही प्रतिफलित होगा।

BSER-163/2018

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड-ख

3
(अ) खड़ी बोली हिन्दी अन्य भारतीय भाषाओं का पुट ग्रहण किए हुए है, इसके शब्द अन्य भाषाओं जैसे ब्रज, अवधी, मारवाड़ी, पंजाबी आदि से लिए गए प्रतीत होते हैं अतः इसके शब्द भण्डार का विकास अन्य प्रचलित भाषाओं से हुआ है।

(ब) हिन्दी व्याकरण शास्त्र हिन्दी भाषा को शुद्ध रूप से बोलने और लिखनें संबंधी ज्ञान प्रदान करता है, इसकी इकाइयाँ वर्णविचार, शब्द विचार और वाक्य विचार हैं।

4.
(अ) चीन :- व्यक्तिवाचक संज्ञा, कार्य करता हैं संज्ञा से संबंध, कर्त्ता कारक, एकवचन, पुल्लिंग।

(ब) से पहले :- संबंध बोधक अव्यय, रजनी के साथ संपूर्ण वाक्य को जोड़ता है।

5. 'चमेली का पुष्प श्वेत वर्ण वर्ण का सुगंधित पुष्प है' वाक्य अभिधा शब्द शक्ति का है। यहाँ वाक्य का स्पष्ट अर्थ ग्रहण होता है कि चमेली के पुष्प की विशेषता बताई गई है जो अभिधा-शब्द शक्ति का लक्षण है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

6 प्रदत्त दोहे में श्लेष अलंकार है।
यहाँ 'तरयौना', 'नाक बास', 'मुकुतन' और श्रुति में श्लिष्ट निहित है। तरयौना का अर्थ कर्णावतंस व 'तरयौ+ना' का अर्थ मुक्ति न मिलना है। नाकबास नाक का आवास व स्वर्ग के आवेश के संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है।
विशेष:- प्रदत्त काव्य पंक्ति में 'ग' वर्ण की आवृत्ति से अन्त्यानुप्रास अलंकार भी है।

7
(अ) Schedule = कार्ययोजना

(ब) Project = परियोजना

कृ. पृ. उ.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

8.

प्रेषक :–
रविकुमार
शासन सचिव,
शिक्षा विभाग,
जयपुर (राजस्थान)।

प्रेषिति :–
समस्त संस्था प्रधान,
शिक्षण संस्थान,
राजस्थान।

पत्रांक :- शा. स. /206/2018 दिनांक :- 20 जून, 2018

प्रिय श्री,

नव वर्ष के के अभ्यार्थी को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के प्रदत्त संदर्भ में आप सभी का अप्रतीम योगदान प्रत्येक वर्ष दिया गया है। इस वर्ष भी 1 जुलाई, 2018 से नया सेशन आरंभ होने जा रहा है, इस हेतु राज्य सरकार द्वारा पूर्व तैयारियाँ भी की गई है नई योजनाएँ बनाई गई है जो अभ्यार्थियों के हित में है।

इन सभी कार्य योजनाओं को क्रियान्वित करना गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा का अभिन्न अंग है, यदि आपको कोई सहायता चाहिए तो कृपया कार्यालय को सूचित करें। इस लक्ष्य के निष्पादन हेतु आप सभी का योगदान नितांत अपेक्षित है।

सधन्यवाद

भवदीय
(हस्ताक्षर)
रविकुमार
शासन सचिव

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

9

निबंध:- समाचार पत्र

प्रस्तावना:-

समाचार पत्र का आरंभ इस विचार के साथ हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति को उनके आसपास घटित होने वाली सूचनाओं की जानकारी हो। पुराने समय से समाचार पत्र लिखे जा रहे हैं व व्यक्तियों की दिनचर्या का एक अभिन्न अंग बन चुके हैं। समाचार पत्र शब्द दैनिक जीवन के ताने बाने पर बुना हुआ पारिभाषिक शब्द है जो एक घटना पर मत निर्माण से लेकर मत प्रदान तक के कार्य के निष्पादन हेतु होता है।

समाचार पत्र का इतिहास:-

पुराने जमाने से समाचार लिखे जाते थे, भारतेन्दु युग में हरिश्चन्द्र चन्द्रिका नामक समाचार पत्र निकाला गया। रामचन्द्र जी ने 'नवचित्रपट' को हिन्दी भाषा का प्रथम समाचार पत्र माना है। इसके पहलु केवल दैनिक तक सिमित नहीं। रहे इसने अपना विस्तार वाणिज्य और विज्ञान क्षेत्र तक भी कर लिया, सन् 1886 में पहली वाणिज्यिक पत्रिका कैपिटल निकली इसके पश्चात दिल्ली में सन् 1943 में 'इस्टर्न इकॉनॉमिकस' निकली, सन् 1936 में कोर्स का आगमन हुआ। पत्रकारिता राजस्थानी जीवन के क्षेत्र में अपना पैर जमा चुकी है तथा दैनिक भास्कर राजस्थान पत्रिका जैसे अनेक समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं।

क. पृ. उ.

BSER-163/2018

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

☞ समाचार पत्र और सामाजिक मूल्य :-

समाज में नैतिकता बढ़ाने में समाचार पत्रों का योगदान अप्रतिम रहा है आज देश में घटित होने वाली कोई घटना छिपी नहीं रह सकती, सामाजिक परिवेश अपने मूल्य, देश की संस्कृति जो समाचार पत्रों में उल्लेखित है के अनुरूप निखार सकता है। अपराध जगत के लोग समाचार पत्र के पत्रकारों से बच नहीं सकते, उनकी पैनी नजर अपराधों पर नियंत्रण रखती है।

☞ समाचार पत्र के प्रकार :-

समाचार पत्र सिमित नहीं तथापि इन्हें कुछ भागों में बाँटा गया है जैसे, वाणिज्यिक पत्र, वैज्ञानिक पत्र और खेल समाचार संबंधी, दैनिक जीवन पर और फिल्मों पर आधारित।
इसके अंग : संपादन, लेखन, संवाद साक्षात्कार पर आधारित है।

☞ समाचार पत्र और शासन :-

समाचार पत्र किसी सरकार को बनाने से लेकर तख्तापलट तक की शक्ति रखते है, भ्रष्टाचार की दुम इनसे दबी रहती है। नेतागण साक्षात करने से पहले कर्तव्य निष्पादन का ध्यान अवश्य रखते है इस प्रकार यह शासन को सुधारते है।

BSER-16-V-2018

क द्वारा त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उपसंहार :-

समाचार-पत्र आज जनता की आवाज बन चुके है, कलम की शक्ति पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण में अपना डंका बजा रही है। आज इनकी बदौलत विश्व में गिरने वाली एक छोटी सी सुई की आवाज सारे संसार में गुंजने लगती है, समाचार-पत्र आज लोकतंत्र के स्तंभ बन चुके है।

खण्ड - ग

10. कदली सीप ---- कटायो सीस

संदर्भ व प्रसंग :-

प्रस्तुत पद्यावतरण हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तिका 'सृजन' में संकलित व नीति की रचनाओं में अभिन्न स्थान रखने वाले कृष्ण भक्त कवि रहीम द्वारा रचित नीति के दोहों में से उद्धृत है। कवि ने संगति के उत्कट प्रभाव व मान के के महत्व का उत्कृष्ट वर्णन किया है।

व्याख्या :-

कवि रहीम कहते हैं कि संगत के प्रभाव से ही स्वाति नक्षत्र में गिरने वाली वर्षा की बूंद केले के वृक्ष पर गिरने पर कपूर, सीपी के मुख में गिरने पर मोती और सर्प के मुख में गिरने पर कालकूट विष बन जाती है, इस प्रकार संगति का अमिट प्रभाव पड़ता है, हम जैसी संगत में रहेगे वैसे ही बनजाएँगे

क्र. पृ. उ.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

रहीम के अनुसार मान अर्थात् आदर का प्रभाव और महत्व अधिक है। जैसे मान से विष खाकर भगवान शिव जगदीश सबसे बड़े ईश्वर बन गए, इसके विपरीत अपमान और धोखे से विष छोड़कर अमृत पीने वाले राहु को अपना सिर गवाना पड़ा। इस प्रकार आदर का महत्व अधिक है।

विशेष :
(अ) पौराणिक आख्यान के अनुसार समुद्र मंथन में चौदह रत्न निकले जिनमें विष और अमृत भी थे,
(ब) रहीम जी की सर्वधर्मसत्कार की भावना और पौराणिक ग्रंथो के ज्ञान का पता चलता है।
(स) ब्रज भाषा प्रयुक्त है।
(द) शांत रस है।

	वाक्य	कलापक्ष	भावपक्ष
1	मान सहित. .... शंभु भयो जगदीस	शांत भाव की अनुभूति	कवि मान के महत्व को प्रकटकरता है।
2.	जैसी संगति. .... फल दीन	अनुप्रास अलंकार	संगति का महत्व बताया गया।

क द्वारा त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

11. संदर्भ व प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यावतरण हिन्दी की पुस्तिका 'सृजन' में संकलित व मूर्धन्य निबंधकार सरदार पूर्णसिंह द्वारा रचित 'मजदूरी और प्रेम' निबंध से संकलित है, लेखक ने मानवीय गुणों और हाथों से प्रतिफलित कर्म को महान माना है।

व्याख्या :- लेखक कहते हैं कि मनुष्य के हाथ से बने कामों में उसकी प्रेममय पवित्रता की सुगंध आती है। राफेल जैसे चित्रकारों द्वारा बनाए गए चित्र देखकर उनकी कला कुशलता का पता चलता है परंतु ऐसी भावनाएं मशीनों द्वारा बने चित्रों में स्पष्ट नहीं होती। वहाँ कोई भाव दिखाई नहीं देता। होटल में बना भोजन भोजन मनुष्य के मशीन बन जाने के कारण निरस हो जाता है यहाँ स्पष्ट होता है कि हाथों से बने चित्रों में सजीवता होती है तथा वो आबाद भावों की बस्ती से होते हैं वहीं मशीनों से निर्मित चित्र निर्जन, मृत और शमशान का भाव कराते हैं। उनमें प्रेम नहीं होता कृत्रिमता और। यात्रिकता छिपी रहती है।

इस प्रकार मनुष्य के हाथ, अपने कर्म में नई शक्ति भर देते हैं, व प्रेम भाव से उसे उज्ज्वल करते हैं।

क.पृ. उ.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

विशेष :
(अ) लेखक मजदूर की मजदूरी का महत्व बताते है
(ब) खड़ीबोलीहिन्दी प्रयुक्त है
(स) शैली विवरणात्मक है।
(द) लेखक ने मजदूर के हाथों से किए काम को बस्ती की तरह प्रेम भावनाओं से पूर्ण बताया है वहीं मशीनों की यांत्रिकता के प्रति घृणा व्यक्त की है।

12. 'बाजार में एक जादू है' कथन बाजार की चमकदमक और आकर्षक प्रकृति को व्यक्त करता है। इसके लिए जैनेन्द्र कुमार ने अपने मित्र का उदाहरण दिया जो बाजार गए तो थे थोड़ी चीजे लेने पर लौटे तो बहुत सारे थैले हाथ में थे उनके बटुए को बाज़ार के जादू की हवा लगी जो सब कुछ उड़ा ले गया। बाजार का यह जादू उनके एक और मित्र पर काम किया तो लेकिन इतनी बुरी तरह फँसा लिया की वो कुछ न ले सके

लेखक के अनुसार यह जादू आँखो की राह से काम करता है और इससे बचने का सरल उपाय तुष्ट मन है जो बाजार से प्रभावित न होकर अपनी शक्तिमत्ता स्पष्ट करे

क्र. पृ. उ.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

बाजार का जादू भले ही बलवान हो परंतु भगतजी जैसे लोगों पर काम नहीं करता जो तुष्ट मन से इसकी शक्ति को बिलखता छोड़ देते है।

इस प्रकार बाजार का जादू केवल तभी प्रभावी होगा जब आपके पास पैसे की एनर्जी हो।

13. बिहारी ने अपनी बड़ी बात को एक छोटे से दोहे छंद में बड़ी प्रभावी तरीके से कहा। उनकी अलंकार प्रियता और प्रदर्शनी इस दोहे में स्पष्ट है;

⇒ डीठी न परत समान द्युति कनककनक से गात ।
भूषण करकस लगे परसि पिछाने जात ॥

बिहारी अपने दोहे में समाहार शक्ति की 'विलक्षणता स्पष्ट' करते हुए लिखते है;

⇒ कहत, नटत, खिझत मिलत खिलत लजियात
भरे भवन में करत है नैनन हीं सों बात ॥

अन्योक्ति के संदर्भ में बिहारी ने कहा है;

⇒ को छुटयो इही जाल परि कत कुरंग अकुलात ।
ज्यो ज्यों सुरझी भज्यौ चहत त्यों त्यों उरझत जात ॥

उक्ति वैचित्र्य में बिहारी श्री कृष्ण को संबोधित कर कहते है।

तुठे तुठे फिरत हो झूठी बिरद कहाई ।
तोको लागि जगत गुरु जगनायक जग बाई ॥

क. पृ. उ.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

इस प्रकार बिहारी ने अपनी काव्य कुशलता को अलंकारिता से सज्जित कर उक्ति वैचित्र्य व अन्योक्ति के रूप में पाठक के समक्ष प्रस्तुत किया है।

14. प्रेमाभक्ति के संदर्भ में सूरदास ने गोपियों द्वारा कृष्ण के प्रेम में रंगी व्यक्तवाणी द्वारा स्पष्ट की है, वे कहती हैं :–

हमारे हरि हारिल की लकरी
मन क्रम बच नन्द नन्दन सो
उर यह दृढ़ करी पकरी

इसके अतिरिक्त :–

बिन गोपाल बैरिन भई कुंजै
तब यह लता लगती अति शीतल
अब भई विषम ज्वाला की पुंजै

यहाँ गोपियों की हारिल पक्षी से तुलना व कृष्ण के बिना उनकी स्थिति अत्यंत भावुक तरीके से स्पष्ट हुई है।

15 तुलसीदास ने धैर्य, धर्म, विवेक, साहित्य, साहस सत्यब्रत और ईश्वर के प्रति आस्था को असमय के सखा बताया है क्योंकि विपत्ति में व्यक्ति को सहायता देने वाले यही है तथा अन्य चीजें केवल बसंत की मस्ती में साथ देती हैं गर्मी की लू में नहीं।

तुलसी असमय के सखा धीरज धर्म विवेक।
साहित साहस सत्यब्रत राम भरोसो एक॥

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

16 शासन की दृष्टि में समानता की बात महत्वपूर्ण है क्योंकि यदि यह नहीं हुई तो शासनव्यवस्था में आपाधापी का माहौल हो जाएगा। अव्यवस्था स्पष्ट दिखने लगेगी और इस स्थिति में शासन टिका नहीं रहेगा।
उदाहरणार्थ; यदि न्यायपालिका में नेताओं की गुण्डागर्दी चलने लगी तो वह हानिकारक होगी।

17 ममता स्वाभिमानी थी उसे पिता द्वारा उत्कोच स्वीकार करना अच्छा नहीं लगा। वह उन्हे उत्कोच को लौटाने के लिए कह रही थी।
उसके हृदय में घृणा का भाव इस पंक्ति से स्पष्ट है; "विपद के लिए इतना आयोजन क्या कोई इस धरती पर नहीं रहेगा जो ब्रह्मण को थोड़ा सा भोजन दे सके।"

18 | कवि कुँवर नारायण अथवा कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर |

कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर :-
जन्म :- सन् 1906 में सहारनपुर जिले के देवबंद ग्राम में हुआ।
जीवन :-
... इनके पिता का नाम पं. रमादत्त था। इन की रुचि समाजिक कार्यों व राजनीति

BSER-16/2018

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

में अधिक रही, इन्होने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया व इस हेतु जेल भी गए थे। इनकी शिक्षा बीच मे ही छुट गई थी तथा स्वाध्याय से ज्ञान प्राप्त किया

लेखनपरिचय :-
इन्होने रिपोर्ताज निबंध व कहानी विधा में रचना की, इनकी रचनाएँ इनकी प्रतिभा का आभास कराती है। इनके लेखन की शुरुआत ज्ञानोदय नामक पत्रिका के संपादन से हुई। इनहोने नवजीवन का भी संपादन किया। राजनैतिक कार्यों में रुचि इनकी लेखनी से स्पष्ट होती है।

रचनाएँ :-
निबंध संग्रह :- जिन्दगी मुस्काई, माटी हो गई सोना, दीप जले, शंख बजे, बजे पायलिया के घूँघरु।
आलोचना :- हिन्दी साहित्य एक अंतरंग परिचय
संस्मरण :- भूले बिसरे चहरे।
संपादन :- ज्ञानोदय, विकास।
कहानी :- आकाश के तारे, धरती के फूल
रिपोर्ताज :- क्षण बोले कण मुस्काए।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

19 शमशेर बहादुर सिंह द्वारा लिए गए उपमान है; भीगा हुआ चौका, काली सिल, केसर बच्चों की स्लेट, खड़िया चौक व गोरांगिनी, इन बिंबों से इनकी भाषा, बिंब और लय पर प्रभावशाली पकड़ का पता चलता है।

20. बसंत की दो चारित्रिक विशेषताएँ:-
(अ) स्वच्छता प्रिय व्यक्ति जो स्वच्छता को आडंबर में नहीं अंतर की दृढ़ता में खोजता है।
(ब) दार्शनिक प्रवृत्ति का इंसान।

खण्ड - घ

21. मनुष्य और उसका काम "गाँधीजी के अनुसार मनुष्य को अपने कर्म से ही वो मिल सकता है जो वह चाहता है। शांति निकेतन में रसोई बनाने के लिए गाँधीजी द्वारा वहाँ शिक्षकों के कार्य की नियुक्ति इसी का प्रमाण है। वह कहते हैं कि 'मनुष्य अपना कर्म अहिंसा और निष्ठा से करे तो उसे वह मिल जाएगा जो उसे चाहिए।

22. 'कल; देखते नहीं यह रेशम से कढ़ा सालू' लड़की के इस कथन से लहनासिंह के हृदय को धक्का सा लगा वह। बिना कुछ देखे सुने

BSER-163/2018

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

दौड़ पड़ा, वह क्रुद्ध न होकर विस्मय मे था। उसे लगा ऐसी संस्कारी लड़की फिर न मिलेगी। काश वह उसे सीधे अपने हृदय की बात बता देता, इसने उसके मन और व्यवहार को प्रभावित किया।

23. महादेवी वर्मा की गाय गौरा को सुई खिला दी गई थी, उसकी आसन्न मृत्यु के भय ने उनको कष्ट भाव से संतृप्त कर दिया वहीं गवाले द्वारा सुई खिलाने के रहस्योद्घाटन से उन्हे आश्चर्य भी हुआ।

24. राजस्थान के गौरव :-
देवनारायण जी :-
चूँकि इन्होनें राजा दुर्जनसाल के प्रकोप से लोगों को मुक्त करवाया इसलिए लोग इनके प्रति आस्था व्यक्त करते है। इन्होने वैद्य, शास्त्र आदि के ज्ञान से भी लोगों का हित किया। इन्होने गोबर और तुलसी की महत्ता बताई। इस प्रकार पीपलदे को स्वस्थ करना, नीनलदे की कुरुपता दूर करना इनके चमत्कार थे।

BSER-16/2018

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

रामदेव जी :-

इन्होंने जम्भा - जागरण आन्दोलन द्वारा दलितों के उत्थान का कार्य किया व इसके साथ ही अपने जीवन को लोक कल्याण हेतु समर्पित कर दिया।

इन्होंने लोगों की हैजे जैसे रोगों में सहायता की वहीं साथियों को पुनर्जीवित कर चमत्कार दिखाया।

संत जम्भेश्वर :-

इन्होंने सामाजिक सद्भावना प्रकृति संरक्षण व जन जीवन में व्याप्त बुराइयों को मिटाने में भूमिका निभाई बिश्नोई समाज का त्याग इमरता देवी जैसे लोगों से स्पष्ट होता है जो इनकी अनुयायी थी

इस प्रकार लोगों के कष्ट हरण सामाजिक उत्थान के कम व बुराइयाँ मिटाने के कारण रामदेव जी, देवनारायण जी और जम्भोजी को भारत का गौरव कहा गया।

खण्ड - ङ

25. टीवी समाचार की विशेषता :-

(अ) दर्शक वक्ता को देख सकता है।

(ब) घटना स्थल का चित्रण संप्रेषण को प्रभावी बनाता है।

कृ. पृ. उ.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(स) दृश्य-श्रव्य माध्यम होने से मन और मस्तिष्क दोनों पर प्रभाव डालता है।
(द) समाचारों में फार्मेट जैसे ब्रेकिंग न्यूज, एंकर विजुअल, ड्राइ एंकर आदि प्रभावकारी है।

26. संपादक के नाम पत्र में आवश्यक तथ्य :-

(अ) समसामयिकविषय पर लिखाहो।
(ब) विषय को स्पष्ट करे।
(स) व्याकरणिक त्रुटियों से मुक्त हो।
(द) प्रभावोत्पादक शैली का प्रयोग हो।
(य) प्रारूप एक सामान्य पत्र जैसा होता है जिसमें पहले प्रेषित के उद्‌बोधन के पश्चात सामान्य जानकारी दीजाती है।

27 साक्षात्कार संबंधी निष्पादन व आरंभ :-

(अ) ऐसा कोई तथ्य संदर्भित न हो जो साक्षात्कार दाता के मान को हानि पहुंचाए।
(ब) साक्षात्कार स्पष्ट व ग्राह्य शब्दो में लिखा जाना चाहिए।
(स) साक्षात्कार दाता की बातों को तोड़ा मरोड़ा न जाए।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(द) साक्षात्कार का स्पष्ट उद्देश्य निहित हो तथा साक्षात्कार कर्त्ता द्वारा किए गए प्रश्न ऐसे हो जिन्हे आम जन को सूचित किया जासके

(च) साक्षात्कार करने के बाद संपादन (विशेषत: लिखित माध्यम के लिए) पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

28 यदि मुझे पत्रकार बनना पड़े तो मैं विज्ञान क्षेत्र में पत्रकारिता करना पसंद करूँगा यह पत्रकारिता खोज परक पत्रकारिता होगी, विज्ञान नवीन संभावनाओं का क्षेत्र है संभवत: इस क्षेत्र में पत्रकारिता मेरे ज्ञान में वृद्धि करेगी
खोज परक पत्रकारिता को चुनने का मत यह है कि इससे सूक्ष्म संरचनात्मक इकाई भी पाठक के सामने स्पष्ट प्रस्तुत होती है, इस प्रकार यह पाठक के भावों को गहनता से प्रभावित करती है। इसी संदर्भ में कहा जा सकता है। कि यह पत्रकारिता अन्य सभी प्रकार की पत्रकारिताओं के गुण रखती है। इससे जनमत की सेवाओं की जानकारी जहाँ मिलती है वही इससे शिक्षा - स्वास्थ्य क्षेत्र में योगदान मिलता है जो समाज कल्याण को प्रेरित करता है

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	29	यात्रा के संदर्भ में मोहन राकेश के विचार!

मोहन राकेश के अनुसार यात्रा यायावर को तटस्थ दृष्टी प्रदान करती है जो उसे रोजमर्रा के द्वन्द्वपूर्ण जीवन में प्राप्त नहीं हो पाती। यायावर अपने नित्य जीवन से निकलकर सामाजिक अनुभव प्राप्त करता है, इस प्रकार जिए गए जीवन का प्रत्येक क्षण कई हीन् भावनाओं को नष्ट करता है तथा यांत्रिकता से पूर्ण जीवन से अधिक आनन्ददाई प्रतीत होता है। यात्रा यायावर के ज्ञान में वृद्धी करती है।

समाप्त